Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P003

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

भाई गुरदास जीवन एवम रचनाएं : वार 'पहली' के विशेष संदर्भ में

हसनदीप सिंह[1]
डॉ. राजेश शर्मा[2]

सार

भारत अपनी विशाल परंपरा के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है। यहां अलग अलग धर्मो और जातों के लोग रहते हैं। जो अलग अलग धर्म से संबंधित अपने संतों, गुरुओं, भक्तों की आराधना करते हैं। ऐसे ही एक आदरणीय गुरसिख जिनका नाम सिख धर्म में बहुत आदर और सम्मान से लिया जाता है जिन्होंने अपना पूरा जीवन गुरु घर की सेवा और सिमरन में लगा दिया। जिन्हें हरमंदर साहिब दरबार साहिब (अमृतसर) में बाबा बूढ़ा जी के बाद दूसरे मुख्य ग्रंथी (सेवादार) की उपाधि प्राप्त थी। भाई गुरदास जी ने अपनी सेवा और अपनी रचनाओं के जरिए समाज को एक नई दिशा प्रदान की। उन्होंने पंजाबी जगत के लिए भी बहुत ही सराहनीय कार्य किए। अपनी बाणी में उन्होंने नैतिक मूल्यों पर मनुष्य का ध्यान केंद्रित किया। उनकी रचनाएं ऐतिहासिक शोध के लिए बहुत ही बेहतरीन संसाधन है। इनकी वारों को सिख धर्म में कीर्तन रूप में बहुत ही सहज भाव से गया जाता है। इस शोध पत्र में भाई गुरदास जी के जीवन एवम रचनाओं पर चर्चा की गई है और शोध पत्र उनके द्वारा रचित वारों में से सिर्फ पहली वार पर ही आधारित है ।

Keywords: भाई गुरदास, वार, सिख धर्म, कीर्तन, पौंडी

भूमिका

सिक्ख धर्म के प्रिय सेवक, विद्वान, आदरणीय आदर्श गुरसिख और पंजाबी जगत के सिरोमणि कवि भाई गुरदास जी जिन्होंने अपना पूरा जीवन गुरु घर की सेवा और धर्म प्रचार के कार्य में लगा दिया जिनकी काव्य रचनाओं को गुरुओं के बाद गुरबाणी की तरह ही कीर्तन रूप में गाने की मन्यता हैं। भाई गुरदास के जन्म पारिवारिक पृष्ठभूमि के बारे में हमें अधिक जानकारी प्राप्त नहीं होती और जो तथ्य हमें प्राप्त होते हैं उस पर भी विद्वानों का मत एक समान नहीं है।

जन्म :

भाई वीर सिंह के अनुसार भाई गुरदास का जन्म 1600 से 1610 बिक्रमी के बीच हुआ था। भाई रणधीर सिंह के अनुसार भाई गुरदास जी का जन्म भल्ला खानदान का सिक्ख बनकर गोइंदवाल आने के बाद सम्मत 1608 बिक्रमी 1551 ई. में हुआ माना गया है। डॉ. हरनाम सिंह शान, प्यारा सिंह पदम, मौला बख्श कुश्ता, मोहन सिंह, संत सिंह सेखों आदि विद्वानों ने भी भाई गुरदास का जन्म 1551 ई. में हुआ बताया है। डॉ. रतन सिंह जग्गी ने भी भाई गुरदास के जन्म के लिए 1608 बिक्रमी (1551 ई.) को अधिक प्रशंसनीय माना है। 'भाई गुरदास जी का जन्म 1551 ईस्वी में हुआ।'[1] इस प्रकार शोधार्थी द्वारा शोध के अनुसार हम भाई गुरदास जी का जन्म 1551 ईस्वी में मान सकते हैं। भाई गुरदास जी के पिता का नाम ईशर दास और माता का नाम जीवनी था। भाई गुरदास जी भल्ला खत्री थे और रिश्ते में वे गुरु अमरदास जी के भतीजे, गुरु रामदास की पत्नी बीबी भानी के चचेरे भाई और गुरु अर्जन देव के मामा, थे। भाई गुरदास का पूरा जीवन गुरुओं के सान्निध्य में बीता। जब वह मात्र 3 वर्ष के थे तब उनके पिता की मृत्यु

[1] पीएच.डी. शोधार्थी, संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर

[2] असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, गुरु नानक देव विश्वविद्यालय अमृतसर

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P003

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

हो गई और जब वे 12 वर्ष के हुए तब उनकी माता का देहांत हो गया। इस तरह उनका बचपन गुरु घर की चार दीवारी में ही बीता।

शिक्षा :

छोटी उम्र में गुरुमुखी, संस्कृत, फारसी, हिंदी सीखने के अलावा उन्हें शास्त्रों, उपनिषदों, पुराणों आदि का भी अच्छा ज्ञान था। उन्होंने यह शिक्षा गोइंदवाल में प्राप्त की। उसके बाद भाई गुरदास जी शिक्षा प्राप्त करने के लिए काशी चले गए उन्होंने गोइंदवाल, काशी, सुल्तानपुर लोधी आदि विभिन्न स्थानों से गुरुमुखी, देवनागरी, संस्कृत, अरबी, फारसी और पुराण, उपनिषदों का ज्ञान प्राप्त किया। 'गुरु की नगरी अमृतसर (रामदासपुर) की नींव रखने के बाद गुरुनगरी में 52 जातियों के लोगों को बसाने वाले भाई सालो, रूप राम, गुरिया में भाई गुरदास भी शामिल थे।'[2]

धर्म प्रचार :

विभिन्न स्थानों से शिक्षा प्राप्त करने के बाद, उन्हें धर्म प्रचार के लिए जम्मू भेजा गया। गुरु रामदास जी के समय पर वे आगरा में रहकर लगभग 4 वर्ष तक धर्म प्रचार की सेवा करते रहे। उन्होंने आगरा, कश्मीर और अन्य स्थानों में धर्म प्रचार किया। उन्होंने गोइंदवाल में बाऊली साहिब की सेवा भी सम्पन्न की। भाई गुरदास की विद्वता के बारे में यह भी ज्ञात होता है कि '30 सितंबर 1578 को आगरा में बादशाह अकबर द्वारा आयोजित सर्वधार्मिक सम्मेलन में जहां विभिन्न देशों, धर्मों के शास्त्रियों, राजाओं, पंडितों और विद्वानों ने इस सम्मेलन में भाग लिया, वहाँ सिक्ख धर्म की ओर से गुरु साहिब ने इसके लिए भाई गुरदास को भेजा गया।'[3] महान घटना, जो इस बात का स्पष्ट प्रमाण है कि भाई गुरदास जी कोई साधारण गुरसिख नहीं थे बल्कि उच्च कोटि के गुणी ज्ञानी विद्वान् थे।

महान कार्य :

भाई गुरदास जी ने अपने जीवन में गोइंदवाल साहिब में बाऊली साहिब की सेवा पूरा करने के इलावा कई महान कार्य किए। गुरु ग्रंथ साहिब की संपादना के दौरान, भाई गुरदास ने मुख्य लिखारी के रूप में कार्य किया। हरमंदर साहिब दरबार साहिब (अमृतसर) में बाबा बूढ़ा जी के बाद दूसरे मुख्य ग्रंथी (सेवादार), अकाल तख्त का निर्माण भाई गुरदास जी और बाबा बूढ़ा जी ने 1665 बिक्रमी में किया। 1699 अकाल तख्त की स्थापना हुई और भाई गुरदास को इसके देखरेख की जिम्मेवारी सौंपी गई। ग्वालियर में गुरु हरगोबिंद साहिब के कारावास के दौरान, वे स्वयं ग्वालियर गए और उन्होंने किलेदार हरदास से बात की और गुरु हरगोबिंद साहिब की रिहाई और अकाल तख्त पहुंचने पर दुआ भी की।

मृत्यु :

उन्होंने अपना पूरा जीवन सिक्ख धर्म के प्रचार और प्रसार की सेवा में लगा दिया। कम उम्र में ही उनके माता–पिता का देहांत हो गया था, इसलिए वे गुरसिखों के परिवार में रहे और अपने अंतिम दिनों में गोइंदवाल पहुंचे। गुर बिलास पातशाही 6 के अनुसार भाई गुरदास का अन्तिम समय 1686 बिकर्मी भादों सुदी पंचवी दिन गुरुवार है।[4] महान कोश के अनुसार भाई गुरदास 1694 बिक्रमी 1637 ई. में हमेशा के लिए गुरु चरणों में चले गए। बहुत से विद्वानों डॉ. रतन सिंह जग्गी, भाई दलीप सिंह दीप, करतार सिंह, संत सिंह सेखों आदि ने भाई साहब की मृत्यु की उपरोक्त तिथि 1694 विक्रमी मानी है। इस प्रकार भाई गुरदास भादों सुदी 8, सम्मत 1694 बिक्रमी अर्थात् 17 अगस्त 1637 ई. में हमेशा के लिए इस संसार से चले गए और उनकी अंतिम रस्मों रिवाजों को गुरु हरगोविंद साहब ने अपने हाथों से संपन्न किया।[5]

रचनाएं

भाई गुरदास जी सात भाषाओं के ज्ञाता थे।[6] उन्होंने ब्रज भाषा में कबित स्वय्ये (675) और पंजाबी भाषा में 40 वारों की रचना की जिसे ज्ञान रतनमाला के नाम से जाना जाता है। आमतौर पर वारों की भाषा पंजाबी है लेकिन इसके इलावा वारों में संस्कृत, अरबी, फारसी, ब्रजभाषा, लेहन्दी, पोठोहारी, माझी आदि उपभाषाओं के शब्दों का प्रयोग किया गया है। जिससे उनके भाषा ज्ञान के बारे में भी पता चलता है। भाई गुरदास ने गुरबाणी व्याख्या और इतिहास का गहन अध्ययन किया है। गुरुओं के समकालीन होने के कारण उन्हें इस कार्य में बहुत मदद मिली। वे सिक्ख धर्म के प्रथम प्रामाणिक प्रतिपादक हैं, जिनकी कृतियों में जीवन जाच, गुरमुख मनमुख, गुरबाणी इतिहास, साधसंगत, प्रीति आदि विषय देखने को मिलते हैं। उनकी 40 वारों की रचना को गुरु अर्जन देव जी ने गुरबाणी की कुंजी कहकर सम्मान दिया है। उन्होंने गुरमत और गुरबाणी के सिद्धांतों को हर वार की हर एक पौड़ी (छंद) में उदाहरणों के साथ बहुत ही सुंदर तरीके से बयान किया गया है। भाई गुरदास की वारों में आए विचारों को हम इन भागों में बांट सकते हैं।[7]

- गुरमत की व्याख्या
- गुर इतिहास का विवरण
- राजनीतिक विचार
- सामाजिक विवरण

ऐतिहासिक पक्ष

भाई गुरदास की प्रथम वार में ऐतिहासिक, राजनीतिक और सामाजिक सम्बन्धों का उल्लेख है। पहली वार का सिख इतिहास से गहरा संबंध है। पहली बार हमें गुरु नानक साहिब, गुरु अंगद देव जी, गुरु अमरदास ,गुरु रामदास, गुरु अर्जन देव जी, गुरु हरगोबिंद साहिब तक गुरुओं के जीवन के बारे में प्रामाणिक जानकारी मिलती है। इसके बिना गुरु नानक देव जी की कोई भी जन्म साखी पूरी नहीं हो सकती।[8] गुरु नानक की उदासियों का जिक्र सबसे पहले भाई गुरदास की पहली वार में मिलता है।[9] उनके प्रथम संस्करण में ऐसे ऐतिहासिक संकेत मिलते हैं जो सिख गुरुओं के इतिहास लेखन के लिए बहुमूल्य सामग्री प्रदान करते हैं। पहली वार अधिकांश गुरु नानक साहिब के जीवनकाल से संबंधित हैं जिसमें गुरु नानक साहिब की जीवन छवियों पर प्रकाश डाला गया है पहली वार में 49 पौड़ियां हैं, जिसमे मंगलाचरण, चार युगों के बारे में, गुरु नानक साहिब से पहले के सामाजिक, राजनीतिक हालातों और परिस्थितियों के बारे में जानकारी गुरु नानक साहिब से गुरु हरगोबिंद साहिब तक के जीवन के बारे में और अंतिम पौड़ी में गुरू मंत्र की व्याख्या की गई है। इतिहासिक दृष्टि से देखें तो पहली वार में गुरु नानक साहिब के जन्म, उदासियों, विद्वानों के साथ विचार चर्चा के बारे में बताया। गया है।

- सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।[10]
- बाबे भेख बनाइआ उदासी की रीति चलाई।[11]
- बाबे आखिआः नाथ जी! सच चंद्रमा कूडु अंधारा।[12]

राजनीतिक पक्ष

भाई गुरदास की कृति में राजनीतिक पक्ष को उजागर करते हुए उस समय की परिस्थितियों को प्रस्तुत करते हुए समकालीन राज्य व्यवस्था पर विचार की है कि किस तरह उस समय के राजा पापियों के रूप में प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे और प्रजा पीड़ित थी। उस समय के राजा, मंत्री, सभी अपने लिए स्वार्थी हो गए थे किस तरह प्रजा पर पाप कर रहे थे।

- कलि आई कुते मुही खाजु होइआ मुरदार गुसाई।

राजे पाप कमावदे उलटी वाड़ खेत कउ खाई।[13]

- बाबा देखै धियान धरि जलती सभ पृथ्वी दिसि आई।[14]

सामाजिक पहलू

पहली बार में गुरु नानक साहिब के समय की सामाजिक परिस्थितियों का विस्तृत वर्णन है। उस समय हिंदू और मुस्लिम के बीच जाति और धर्म के नाम पर तनाव के कारण हिंदुओं हिन्दू और मुसलमानों के सामाजिक जीवन में बहुत अंतर था। गुरु नानक साहिब के जन्म के समय तक समाज के मूल्य ध्वस्त हो चुके थे। उस समय पंडित और काजी आपस में जाति और धर्म के नाम पर आपस में लड़ रहे थे और सिद्ध (जोगी) पर्वतों पहाड़ों में जाकर छुप गए थे और संसार में लोग ज्ञान के बिना अंधे हो गए थे और चारों ओर कूड़ का पसारा था। जिसकी स्पष्ट उदाहरण हमें भाई गुरदास की पहली वार में इस प्रकार देखने को मिलती है।

- सच किनारे रह गया खहि मरदे बाहमन मौलाने।।[15]
- सिद्ध छपि बैठे परबती कउण जगत्रि कउ पारि उतारा।।[16]
- परजा अंधी ज्ञान बिन कूड़ कुसति मुखहु आलाई।।[17]

उन्होंने उस समय गुरु नानक साहिब ने समाज को कूड से निकलकर सच का उपदेश दिया और एक ईश्वर से जोड़ा। भाई गुरदास ने अपने शब्दों में गुरु नानक साहिब की उन परिस्थितियों का वर्णन किया है जब वे विश्व को बचाने के लिए धर्म प्रचार पर चले गए थे। गुरु नानक साहिब ने सामाजिक विषमता को दूर करके अमीर–गरीब को बराबर करके मानवता का पाठ पढ़ाया।

बाबे भेख बणाइआ उदासी की रीति चलाई।[18]

धर्म प्रचार के दौरान, उन्होंने पंडितों, जोगियों, सिद्धों, मौलवियों और विद्वानों के साथ वार्तालाप करते हुए उनके सवालों के जवाब दिए और लोगों को एक ईश्वर से जोड़ते हुए हिंदू और मुस्लिम सभी को एक श्रृंखला में रखा। गुरु नानक के समय पंजाब की ही नहीं बल्कि पूरे भारत के लोगों की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, और धार्मिक हालात ठीक नही थी। जिसके बारे में हमें गुरु नानक की अपनी बाणी और भाई गुरदास की रचनाओं से भी पता चलता है। हिंदुओं और मुसलमानों के बीच जाति, धर्म और नफरत की भावना थी। सामाजिक कद्दरें कीमतें भी नही थी और पारिवारिक रिश्ते भी स्वार्थ आधारित थे।

इसत्री पुरखै दाम हितु भावै आइ किथाऊ जाई।[19]

गुरु नानक साहिब ने देश के कोने कोने में जाकर अलग अलग धर्मों, जातों, वर्गों के लोगों को एक ईश्वर के साथ जोड़ा और मानवता का उपदेश दिया और एक निर्मल पंथ की स्थापना की।

वार शब्द का अर्थ एवम परिभाषा

भाई कान्ह सिंह नाभा के अनुसार वार युद्ध से संबंधित एक काव्य है जिसमें वीरता का वर्णन है।[20] डॉ. गंडा सिंह के अनुसार वार योद्धाओं के कारनामों को बयां करती वीर रसी करतार की महिमा भरी गौरवशाली कविता है।[21] प्रो. साहिब सिंह के अनुसार वार उसे कहते हैं, जिसमें किसी वीर के रणभूमि आदि में दिखाए शौर्य के कारनामों का उल्लेख किया हो।[22] पंजाबी साहित्य में वार कविता का एक बहुत प्रभावी रूप है, जिसमें पौड़ी (छंदों) के माध्यम से एक योद्धा की कहानी उत्साहपूर्वक सुनाई जाती है, और इस कहानी के एक योद्धा या एक धर्म परायण, बहादुर, निडर, बहादुर, देशभक्त, स्वतंत्रता और अन्य शुभ गुणों की प्रशंसा की जाती है।[23]

पद्य व्यवस्था

Gurukul International Multidisciplinary Research Journal (GIMRJ)*with* International Impact Factor 8.249
Peer Reviewed Journal
https://doi.org/10.69758/GIMRJ2406IIV12P003

e-ISSN No. 2394-8426
June-2024
Issue–II, Volume–XII

पौड़ी (छंदों) के लिए कुछ छंद निश्चित हैं जैसे निशानी छंद , सिरखंडी, हंसगति आदि । वार में विचारों को बदलने के लिए कभी–कभी दोहरा का भी उपयोग किया जाता है। गुरु ग्रंथ साहिब में वारों के साथ गुरुओं के श्लोक भी दर्ज हैं । भाई गुरदास ने पहली वार में निशानी छंद का प्रयोग किया है। निशानी छंद 23 मात्रा का छंद है। पहला विश्राम 14 से और दूसरा 9 से है। लेकिन गुरदास जी ने अपनी मर्जी से मात्रा घटाई या बढ़ाई है। भाई गुरदास ने 13–16 मात्रा का निशानी छंद ज्यादा इस्तेमाल किया है। प्रत्येक छंद में 7 या 8 चरण (बंद) होते हैं। हर वार की अंतिम पंक्ति को आधा ही रखा जाता है। जो प्रायः 16 मात्रा की होती है। इसके अतिरिक्त काव्य के नौ रसों का भी उल्लेख मिलता है। भाई गुरदास ने पहली वार में करुणा रस, बीर रस का प्रयोग किया है। शांत रस और सिंगार रस बहुत कम हैं और कहीं देखोगे को मिलते हैं ।

बाबा देखै धिआन धरि जलती सभि प्रिथवी दिसि आई।[24]

इन पंक्तियों से इतनी मानवता की आत्मा की पुकार वेदना के साथ सुनाई दे रही है जिससे करुणा रस उत्पन्न होना स्वाभाविक है।

संगीतिक पक्ष :

वैसे तो भाई गुरदास की रचना की भाषा पंजाबी है, लेकिन अगर हम प्राचीन शुद्ध पंजाबी भाषा को देखना चाहें, तो हमें गुरबाणी और भाई गुरदास के शब्दों के इलावा कहीं भी नहीं मिलेगा।[i] उनके लेखन में पंजाबी मुहावरों का बहुत ही खूबसूरती से इस्तेमाल किया गया है। इनकी वारों में अरबी, फारसी के शब्द जैसे बैसंत्रे, बिरत, मेदनी, धौल, अप्सर, गुबार, कुफर जारत , मुल्हद, गिलानी, बदनी आदि शब्दों का भी प्रयोग हुआ है। इनकी वारों को कीर्तनकारों के द्वारा शब्द रूप में बहुत ही सुंदर और संगीतिक भाव से गायन किया जाता है। प्रथम वार की 49 पौडिया विभिन्न विषयों से संबंधित हैं जिनमें से कुछ पौडियों का संगीतमय विश्लेषण इस प्रकार है।

- सतिगुर नानक प्रगटिआ मिटी धुंधु जगि चानणु होआ।[25]

यह पहली वार की 27वीं पौड़ी (श्लोक) है जो गुरु नानक साहिब के जन्म से संबंधित है, जिसमें भाई गुरदास ने बताया है कि गुरु नानक के आने से अज्ञानता का अँधेरा सब तरफ से दूर हो गया और गुरु नानक ने कलियुग में अवतार लिया। इस छंद को भाई सतविंदर हरविंदर (दिली वाले), भाई मेहताब सिंह, भाई जगतार सिंह, सुखविंदर सिंह, भाई बलविंदर सिंह रंगीला, भाई जगतार सिंह (हजूरी रागी) आदि अलग–अलग कीर्तनकारों ने इसे कई अलग–अलग रागों और तालों में कीर्तन रूप में गाया है। जिसमें भाई जगतार सिंह और सुखविंदर सिंह के गायन को खूब सराहा गया है। भाई जगतार सिंह ने इसको राग भैरवी में सिंगार रस की प्रधानता के साथ रूपक ताल में शब्द रूप में गायन किया है जो काफी लोकप्रिय हुआ।

- पुछनि गल ईमान दी काजी मुलाँ इकठे होई। [26]

यह पहली वार की 33वीं पौड़ी (श्लोक) है जिसमें गुरु नानक साहिब के साथ काजीयों की हुई बातचीत को दिखाया गया है। जिसमें गुरु नानक साहिब ने शिक्षा दी है कि इंसान धर्म से नहीं बल्कि कर्मों से ईश्वर की दरगाह में मनुष्य के कर्मों का इंसाफ होगा। इस शब्द को भाई जसबीर सिंह, भाई जगतार सिंह (हजूरी रागी), भाई जुझार सिंह, भाई हरजिंदर सिंह (श्रीनगर), भाई संदीप सिंह, भाई निर्मल सिंह खालसा आदि ने अलग–अलग रागों और अलग अलग तालों में गाया है। जिसमें भाई निर्मल सिंह खालसा ने कैहरवा ताल, भाई जुझार सिंह ने भैरवी राग में कैहरवा ताल, भाई जसबीर सिंह ने रूपक ताल में शब्द और भाई जगतार सिंह ने राग बिलावल में रूपक ताल में गायन किया है। इसके इलावा प्रथम वार की और भी कई पौड़िया (छंद) अलग–अलग कीर्तनकारों द्वारा कीर्तन के रूप में गाई गई हैं।

सारांश

भाई गुरदास जी ने अपने पूरे जीवन में गुरु घर में अपनी सेवा और अपनी रचनाओं से अमूल्य योगदान दिया है। उनकी वारें विष्य वस्तु के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं। इसके शुरुआत में मंगलाचरण, चारों

युगों का वर्णन, गुरु नानक साहिब से पहले की सामाजिक परिस्थितियों का वर्णन किया गया है। दूसरे भाग में 23वीं से 44वीं पौडिया (श्लोक) तक गुरु नानक के जीवन के बारे में संक्षिप्त जानकारी है। जो इतिहास प्रस्तुत करने के लिए एक बेहतरीन संसाधन है। 45वीं, 46वीं और 47वीं पौड़ी में गुरु अंगद देव जी, गुरु अमर दास जी, गुरु रामदास और गुरु अर्जन देव जी की महिमा का वर्णन है। 48वीं बार में गुरु हरगोबिंद साहिब जी की स्तुति में नसीहत भरी है। अंतिम छंद वाहेगुरु मंत्र की व्याख्या करता है। इस प्रकार इस प्रथम वार में इतिहास, पौराणिक कथाओं, सामाजिक, राजनीतिक पहलुओं की जानकारी दी गई है और इन वारों का गायन कीर्तनकारों के द्वारा शब्द रूप में किया जाता है। इन छंदों को कीर्तन रूप में गाकर संगीत की दृष्टि से विश्लेषण भी किया गया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1ण कोमल, हरनेक सिंह भाई गुरदास जीवन चिंतन ते कला, पन्ना नंबर 10
2ण सिंह, ज्ञानी ज्ञान, त्वारीख गुरु खालसा, हिस्सा पहला, पन्ना 343 (पंजाबी)
3ण सिंह, ब्रह्मजगदीश, भाई गुरदास रचना संसार, पन्ना 12
4ण सिंह, भगत, गुरबिलास पातशाही 6, पन्ना 422 (पंजाबी)
5ण कोमल, हरनेक सिंह, भाई गुरदास जीवन चिंतन ते कला पन्ना नंबर 31
6ण भाई गुरदास, सरदूल सिंह , पन्ना 32 (पंजाबी)
7ण कौर राजिंदर, वारां भाई गुरदास दियां इक साहितिक अध्यन, पन्ना 61 (पंजाबी)
8. Mcleod H.W., Guru Nanak and the Sikh Religion, page 14
9ण कोमल किरपाल सिंह, जन्म साखियां साहित कि इतिहास ?, जन्म साखी अध्यन, पन्ना 65 (पंजाबी)
10ण वारां भाई गुरदास, वार 1 पौड़ी 27
11ण वही, वार 1 पौड़ी 24
12ण वही, वार 1 पौड़ी 29
13ण वही, वार 1 पौड़ी 30
14ण वही, वार 1 पौड़ी 24
15ण वही, वार 1 पौड़ी 21
16ण वही, वार 1 पौड़ी 29
17ण वही, वार 1 पौड़ी 30
18ण वही, वार 1 पौड़ी 24
19ण वही, वार 1 पौड़ी 30
20ण गुरशब्द रत्नाकर, महान कोश, पन्ना 817 (पंजाबी)
21ण पंजाब दियां वारां, डा. गंडा सिंह, पन्ना 78 (पंजाबी)
22ण सिंह, प्रो. साहिब, आसा की वार स्टीक, (पंजाबी)
23ण बेदी, डा. काला सिंह, बरकार गुरु नानक, पन्ना 391 (पंजाबी)
24ण वारां भाई गुरदास, वार 1 पौड़ी 24
25ण वही, वार 1 पौड़ी 27
26ण वही, वार 1 पौड़ी 33